Paper-7

Q- Trace the development of temple architecture in the Gupta age & [struck out] का सूर्य मंदिर

Part II
P. III

गुप्तकालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डाले ?

उत्तर — प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त काल को स्वर्ण युग माना गया है। इस काल में मंदिरों की वस्तुकला की अभूतपूर्व उन्नति हुई। इस काल के समय अनेकों संख्या में मंदिर निर्मित किये और उनके अभूतपूर्व देन मानी जा सकती है इस काल में अनेक मंदिर निर्मित हुए जिनमें भूमरा का शिव मंदिर, नचना का पार्वती मंदिर, भीतरगाँव का मंदिर आदि काफी उल्लेखनीय है।

गुप्त काल में ईंट का प्रयोग होता था और मंदिर समतल भूमि तैयार किये जाते थे। मंदिर में विभिन्न देवताओं की मूर्तियां स्थापित है फिर भी सभी की वस्तु कला में समता है उनके अवलोकन से सर्वेक्षण से निम्न बातें प्रकाश में आती है।

(a) गुप्त काल में मंदिरों की स्थापना एक ऊंचे चबूतरे पर की तथा मंदिर तक पहुंचने के लिए सिढ़ियां बनी होती थी।

(b) प्रारम्भिक मंदिर की छतें समतल है जिसमें जिन्होंने कालांतर में विकसित होकर शिखर का रूप धारण कर लिया।

(c) मंदिरों की बाहरी दिवारे सादी है।

(d) गर्भ गृह में एक द्वार रहता था और उसी गृह में रख प्रतिमा स्थापित रहती थी।

(e) द्वार स्तंभ अलंकृत रहते थे। इस स्तंभ में पूर्ण कलश की आकृति दिखाई पड़ती है उसी कलश से पुष्प बाहर निकले दिखाई देते है। इन स्तंभों पर बेल बूटे भी उत्कीर्ण है। पूर्ण कलश तो वैभव का प्रतीक है। घर में जल से कमला तथा जल से विष्णु की उत्पत्ति हुई।

(f) द्वार के दोनों पार्श्व में द्वार पाल के स्थान पर गंगा यमुना की मूर्ति

Scanned with CamScanner

खोदी जाती थी। गंगा मकर वाहिनी तथा यमुना कूर्म वाहिनी दिखलाई गई है। ब्राउन का मत है कि बौद्ध युग की यक्षिणी या सालभंजिका का समादर न रहा। इसके स्थान पर ब्राह्मण धर्म में गंगा यमुना का स्थान दिया गया।

(9) गर्भ-गृह के चारों तरफ प्रदक्षिणा पथ रहता है जो छत से ढका है।

(10) मंदिर के वर्गाकार स्तम्भों के शीर्ष पर चार सिंह की मूर्तियाँ पीठ पर पीठ लगे बनी हैं जिन पर छत का भार रहता था।

(i) गुप्त कालीन मंदिरों के गर्भ गृह में प्रतिष्ठित प्रतिमा के केवल पूजन निमित्त अथवा प्रकाश निमित्त थे। उस स्थान पर उपासक जनता के सभा स्थल का सर्वथा अभाव था।

गुप्त काल के मंदिरों को दो भागों में बांटा जा सकता है—

(i) पूर्व गुप्त कालीन मंदिर (350-550 ई०)

(ii) उत्तर गुप्त युग (350 — 600 ई०) के मंदिर,

जिनमें शिखर का प्रादुर्भाव हुआ। तिगवा मंदिर मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित है। इनमें एक चकोर कमरा (गर्भगृह) बना है। जिसमें शिव लिंग स्थापित है उसकी छत चिपटी है बाहरी भाग में कलात्मक ढंग से बेल बूटे सहित स्तंभ बना है जिसमें पूर्व कथन के अतिरिक्त चार सिंह पीठ से पीठ लगाए बैठे हैं छत का भार उसी पर आधारित प्रतीत होता है। सांची के मंदिर भी उसी के समान है। शिखर के अभाव के कारण इसे पांचवीं सदी के आरंभ में निर्मित मानते हैं। इस शैली में भूमरा (नागौद रियासत, मध्य प्रदेश) का शिव मंदिर तथा के नाचना (आजमगढ़ मध्य प्रदेश) के पार्वती मंदिर उल्लेखनीय हैं। दोनों में चिपटी छत सहित बरामदा एक समान है तथा स्तंभ

मंदिर में केवल गर्भ-गृह है जिसके चारों तरफ चबूतरा प्रदक्षिणा पथ की याद दिलाता है। द्वार स्तंभ के दाहिने मकर वाहिनी गंगा तथा बायीं ओर कूर्मवाहिनी यमुना की मूर्तियां बनी हैं। मंदिर के चौखट अलंकृत हैं तथा स्तंभ पूर्ण कलश के कारण गुप्त कालीन माने गये हैं। नाचना मंदिर का वर्गाकार चबूतरा 35 फीट चौड़ा है। इसमें भी प्रदक्षिणा पथ बना है। नाचना का मंदिर भूमरा से अधिक कलापूर्ण है। इसमें चौखट के अतिरिक्त पार्श्व की दीवाल लता पुष्प तथा अन्य की आकृतियों से सुसज्जित है।

दूसरी श्रेणी में उन मंदिरों की गणना होती है जो गुप्त युग के बाद के हैं। पश्च छत के ऊपर ऊंचे एक प्रकार के शुण्डक के आकार बना है जिसे 'शिखर' कहते हैं। शिखर शब्द से मंदिर की गर्भ गृह की छत की ऊपरी बनावट से तात्पर्य है। चपटी छतों से गर्भ गृह की निचली (समतल) छत के ऊपर नया आकार बनने लगा। बनावट चारों दिशाओं में एक साथ आरंभ होती है। वह क्रमशः सिमटते जाती है। चारों तरफ ऊपरी आकार की पंक्तियां एक स्थान पर मिल जाती हैं जिसे भारतीय वास्तु कला में शिखर के नाम से पुकारते हैं। ऊपर से इसका आकार होता है किन्तु इसके ऊपरी भाग को कलश तथा निचले भाग को आमलक कहते हैं। इस प्रकार का शिखर उत्तरी भारत के मंदिरों में पाये जाते हैं इसलिए इसे 'आर्य शिखर' कहते हैं। भारत में मंदिरों में कई प्रकार के शिखर होते थे। गुप्त कालीन छठी सदी के मंदिरों में शिखर का प्रादुर्भाव हुआ। इस वर्णन में भितरगांव (कानपुर, उत्तरप्रदेश)

तथा देवगढ़ (झांसी उत्तरप्रदेश) के मंदिरों का स्थान दिया गया है। भीतर गांव मंदिर को चौकोर समतल छत पर इस मंदिर की योजना तैयार की गई थी। जिसका व्यास 36 फीट के बराबर है। इस के पूर्वी भाग में एक स्तंभ युक्त बरामदा है जहां सिढ़ी के सहारे पहुंच सकते है। सामने 15 फीट वर्गाकार में गर्भ गृह निर्मित है। जिसमें प्रतिमा स्थापित की गई थी। इस मंदिर की सुन्दरता दीवाल पर खुदे पक्की मिट्टी के फलक (Terracotta) द्वारा बढ़ जाती है। कालाकारों का कार्य कुशलता का यह फल था। झांसी के देवगढ़ मंदिर में हम गुप्त स्थापत्य कला की चरमोत्कर्ष देखते हैं उनका ऊपरी भाग पिरामिड के सदृश गुंबज वाला है। इसमें 40 फीट शिखर का अनुमान लगाया जाता है। भग्नावस्था में है पांच फीट ऊंचे चबूतरे पर गर्भगृह तैयार किये गये थे जिसके चारों तरफ सिढ़ियां बनी है इस मंदिर के गर्भगृह में चारों दिशाओं से प्रवेश द्वार बने है मंदिर में लम्बी ईंटें (17½ × 10½ × 3 फीट) के ओर फलक वाली सामग्री बनाया गया है। देवगढ़ मंदिर की खुदाई अत्यन्त कलात्मक है इसका अलंकरण अत्यन्त अद्वितीय है। इसमें उच्च श्रेणी की कला तथा अद्वितीय गौरव मय परिमार्जन के गुणों से देवगढ़ गुप्त काल की सर्व श्रेष्ठ कृतियां मानी गई है।

गुप्त कालीन अन्य मंदिरों की बनावट में भी परिस्कार है तेली का मंदिर (ग्वालियर) तथा सिरपुर का मंदिर ऐसे शिखर वाली इमारतें है। ऊंचे चबूतरे पर बनी है जिसमें एक कमरा गर्भ गृह तथा बरामदा दीख पड़ता है उन पर ईंटों की खुदाई सतर्कता पूर्ण की गई है। देखने में पूरा मंदिर

की ~~सुन्दरता~~ एक ही आकार में सम्पूर्ण भाव प्रगट करता है।

अतः गुप्त काल का प्रभाव समस्त भारत पर पड़ा और ईंट का प्रयोग प्रधान या सर्वत्र होने लगा। बौद्ध धर्म के चार तीर्थों - कपिलवस्तु एवं लुम्बिनी बोध गया, सारनाथ तथा कासिया में मंदिर एवं विशाल संघाराम (विहार) ईंट के बने दिख पड़ते हैं। इन स्थानों पर भिक्षुओं के लिए विस्तृत क्षेत्र में विहार बनाये गये। नालंदा का नाम भी इस प्रसंग में लिया जा सकता है। इसके वर्तमान भग्नावशेष की विशालता का वर्णन सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेन सांग ने किया था। छः सौ फीट ऊँचे विहार का निर्माण करना साधारण काम न था। आज भी दूर से तैयार मंदिर तथा विहार की श्रेणियाँ यह बतलाती हैं कि पाँचवी सदी से प्रस्तर ~~[illegible]~~ का प्रयोग प्रायः समाप्त हो गया। चैत्य या विहार नाम की गुफाएं स्थगित हो गई। पहाड़ों को खोदकर गृह निर्माण के कार्य का अंत हो गया किन्तु समतल भूमि में ईंट के सहारे छोटी या विशाल इमारतें बनने लगी। यह सभी गुप्त स्थापत्य कला का प्रभाव था। जो पांचवीं सदी के पश्चात कार्यान्वित किया गया। बंगाल के राजशाही जिले में स्थित पहाड़पुर का भी नामोल्लेख किया जा सकता है। विशाल विहार तथा मंदिर एवं संबद्ध पकी मिट्टी के टिकरे उसके कला को अमर करते हैं। गुप्त युग की यह विशेषता रही कि हिन्दू मंदिरों की अधिकता के कारण विहार निर्माण हीन अवस्था को प्राप्त हो गया। उसके पूर्व बौद्ध कलाकार विहार तथा देवता के गर्भ गृह (मंदिर) में कोई विहार का प्रयोजन तथा आवश्यकता जागती रही। अतः बौद्ध परंपरा को गुप्त नरेशों द्वारा प्रोत्साहन नहीं मिल सका।

यही कारण है कि विहार का प्रचलन समाप्त हो गया। उस युग में वर्णाश्रम के सिद्धान्त का बोल-बाला था। भिक्षु बनकर संसार त्यागने की विचार धारा अवरुद्ध हो गई। संसार में रहकर भक्त जन पूजा के विधान से मोक्ष की कल्पना करते, मंदिरों को ही उसके लिए सर्वथा योग्य स्थान समझा गया। इसलिए ~~बोध~~ मगध को छोड़कर अन्य स्थानों में विहार की स्थिति हीन होती गयी। नालंदा में ब्रजयान शाखा तथा पाल शासन वाले नरेशों के कारण इमारतों की भग्न श्रृंखला आज भी दीख पड़ती है।

पांचवीं सदी के मंदिरों में बौद्ध गया के मंदिर की भी गणना होती है। बौद्ध साहित्य में इसे महाविहार विहार भी कहा गया। भारत के मंदिरों में बौद्ध गया का एक आकर्षक तथा प्रभावशाली धार्मिक इमारत है। इसकी स्थापत्य कला-अनोखी तथा विलक्षण है। यद्यपि गुप्त युग में शिखर का आरंभ हुआ था, किन्तु इसकी अपनी विशेषता है। गुप्त काल में वैष्णव मत का प्रचार से जनता का ध्यान बौद्ध ~~विहारों~~ विहारों से हटता गया तथा लोग विमुख होते गये।

इस तरह गुप्त राज्य में मंदिर का वास्तु कला का विकास पूर्ण से हुआ था।